प्रो. (डॉ.) दिव्या नाथ उच्च शिक्षा के क्षेत्र से जुड़ी एक सुस्थापित एवं लोकप्रिय हस्ताक्षर हैं। उच्च कोटि की शिक्षाविद् होने के साथ-साथ वह एक सफल प्रशासक भी हैं। 26 वर्षों तक निरंतर उत्तर प्रदेश के विभिन्न राजकीय महाविद्यालयों में अपनी शैक्षिक सेवाएं प्रदान करने के उपरांत सन् 2016 में पदोन्नति प्राप्त कर वह राजकीय महाविद्यालय कुटा, कुशीनगर एवं श्रमजीवी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ में क्रमशः प्राचार्य पद एवं क्षेत्रीय अधिकारी, मेरठ मंडल, मेरठ के पदभार पर निष्ठापूर्वक कार्य करने के उपरांत, संप्रति कु. मा. राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर का प्राचार्य पद सुशोभित कर रही हैं। डॉ. दिव्या नाथ विभिन्न राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं के आयोजन/अध्यक्षता, उच्चस्तरीय शोध पत्रों के लेखन, विभिन्न पुस्तकों के संपादन कार्य, शोध निर्देशन इत्यादि अकादमिक कार्यों में निरंतर संलग्न हैं। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, मुख्यतः सुरक्षा परिषद् में भारत की भूमिका, साफ, बिम्सटेक और दक्षिण एशिया से जुड़े मुद्दों पर आपकी विशेष अभिरुचि है। राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित नेक संस्था में पद पैनल डीन की सदस्य के रूप में नियमित हैं, साथ ही शासन और विश्वविद्यालय स्तर की विभिन्न प्रशासनिक समितियों में प्रतिष्ठित पद धारित किए हुए हैं। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आपकी उल्लेखनीय भूमिका के लिए सन् 2014 में 'राष्ट्रीय मेंटर अवार्ड' एवं सन् 2018 में 'द्रोणाचार्य अवार्ड' से भी सम्मानित किया गया है।

डॉ. किशोर कुमार, सुविख्यात इतिहासविद् लोक सेवा आयोग, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज द्वारा सन् 2000 में चयनित होने के उपरांत विभिन्न राजकीय महाविद्यालयों में विगत दो दशक से अपनी शैक्षिक सेवायें प्रदान करते हुए वर्तमान में कु. मा. राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर में एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास पद पर कार्यरत होने के साथ-साथ कुशीनगर द्वारा स्थापित स्वामी विवेकानन्द अध्ययन केन्द्र के निदेशक भी हैं। 'कीर्तिहास'/Keertihas नामक फेसबुक पेज के माध्यम से भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं प्राच्य ज्ञान का समसामयिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने वाले स्वतंत्र वक्ता, समाजसेवी एवं नीतिदृष्टा होने के साथ ही आप सामाजिक मुद्दों के निष्पक्ष विश्लेषक हैं। पर्यावरण संरक्षण के प्रति आपकी गहरी रुचि व प्रयासों को देखते हुए आपको 2019 में दीन लीडरशिप अवार्ड तथा वर्ष 2020 में पर्यावरणविद् पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित IIPA, IPSA, IHC जैसी विभिन्न अकादमिक संस्थाओं में अध्य प्रतिष्ठित पद धारित करते हुए अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। 40 से अधिक विभिन्न राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में आयोजन कर्ता एवं मुख्य वक्ता अथवा विषय विशेषज्ञ के रूप में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, साथ ही जर्मनी तथा आस्ट्रिया में आयोजित हुए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में चेयर के रूप में भी आपने सम्मानित प्रतिभागिता की है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुमोदित दो वृहद तथा एक लघु शोध परियोजना को सफलतापूर्वक पूर्ण कर, राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशकों के द्वारा तीन पुस्तकों का प्रकाशन, आठ पुस्तकों का संपादन, 30 से भी अधिक मानक शोध पत्रों का प्रकाशन, यूजी सी. कोर्स डॉक्यूमेंट फेलो व अन्य शोध छात्रों के शोध निर्देशन के माध्यम से आप शैक्षिक/अकादमिक कार्यों को निरंतर गति प्रदान कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि डॉ. किशोर कुमार भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् द्वारा विदेशी विश्वविद्यालयों में अध्यापन हेतु 'प्रोफेसर चेयर—भारतीय अध्ययन' पद हेतु पैनल में 2018 से चयनित हैं।

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा, कु. मा. राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर में एसोसिएट प्रोफेसर प्राणि विज्ञान के पद पर कार्यरत हैं, साथ ही वह यूजीसी द्वारा अनुमोदित दो व्यावसायिक पाठ्यक्रमों (MMDT, ATHM) के नोडल अधिकारी हैं। वह सन् 2000 से लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित होने के उपरांत 20 वर्षों से निरंतर विभिन्न राजकीय महाविद्यालयों में अपनी शैक्षिक सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। नवाचार के रूप में संगीत चिकित्सा के क्षेत्र में आपका वृहद कार्य एवं गहरी अभिरुचि है। आप IAMT संस्था के आजीवन सदस्य भी हैं जो कि संगीत चिकित्सा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही है। राजकीय महाविद्यालयों में शिक्षण के क्षेत्र में ICT को प्रोत्साहित करने का श्रेय आपको प्राप्त है। विभिन्न राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में आपके 160 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हैं। आपने 14 राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन एवं 22 प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिभागिता की है साथ ही अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशकों द्वारा आपकी 4 पुस्तकें प्रकाशित हैं। आपके निर्देशन में अनेक छात्र-छात्राएं शोध कार्यरत हैं। दूरदर्शन चैनलों पर आपके व्याख्यान एवं साक्षात्कार स्थानीय समय पर प्रसारित होते रहते हैं। डॉ. शर्मा, RUSA UPSAAS, SLQAC इत्यादि शासन द्वारा निर्दिष्ट विभिन्न अकादमिक/प्रशासनिक समितियों में महत्त्वपूर्ण पदों पर काफी सेवायें प्रदान कर रहे हैं। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आपके नव चार एवं वैज्ञानिक योगदान के लिए आपको शिक्षा रत्न, शिक्षक श्री, IAES गोल्ड मेडल आदि पुरस्कारों/सम्मानों से भी सम्मानित किया जा चुका है।

डॉ. दीप्ति वाजपेयी, लोक सेवा आयोग द्वारा सन् 2001 में प्रवक्ता संस्कृत पद पर चयनित होकर, विभिन्न राजकीय महाविद्यालयों में शैक्षिक सेवा प्रदान करते हुए सम्प्रति, कु.मा. राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर में एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत के पद पर अध्यापनरत हैं। एम. ए., एम. एड., नेट, पीएच.डी. योग्यताधारी डॉ. वाजपेयी ने राजकीय सेवा में आने से पूर्व अशासकीय महाविद्यालय के बी.एड विभाग में प्रवक्ता पद पर अपनी सेवाएं प्रदान की हैं। संपादिका 'संस्कृत चाँदिका' में पर्यावरण संरक्षण जैसे सामसामयिक विषय पर यू.जी.सी. द्वारा अनुमोदित शोध परियोजना पूर्ण कर चुकी हैं। 40 से अधिक उच्च स्तरीय शोधपत्रों का राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय मानित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशन, विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों तथा कार्यशालाओं का आयोजन एवं सहभागिता, लेखिका के रूप में दो पुस्तकों का प्रकाशन, एक पुस्तक प्रकाशनाधीन, नौ पुस्तकों का संपादन, ई—पाठ्य विषयवस्तु के निर्माण इत्यादि के माध्यम से अकादमिक जगत से जुड़े विभिन्न कार्यों में निरंतर संलग्न हैं, साथ ही विभिन्न अकादमिक समितियों के शैक्षिक — प्रशासनिक कार्यों में निष्ठापूर्वक जुड़ी हुई हैं। छात्र जीवन से ही कविता सृजन में रुचि होने के कारण समय-समय पर आकाशवाणी द्वारा आपकी कविताएं प्रसारित होती रही हैं। डॉ. दीप्ति वाजपेयी के निर्देशन में अनेक छात्राएं शोधरत हैं। आपकी अभिरुचि के शोध कार्य क्षेत्र भारतीय संस्कृति, प्राच्य ज्ञान एवं वैदिक साहित्य हैं।

नालंदा प्रकाशन
ज्ञान की सांस्कृतिक विरासत
दिल्ली

₹ 695
ISBN 978-81-949978-4-1
S 42
www.nalandaprakashan.com

प्राच्य ज्ञान, सभ्यतागत पुरावशेष एवं समकालीन विश्व

प्रो. (डॉ.) दिव्या नाथ
डॉ. किशोर कुमार
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा
डॉ. दीप्ति वाजपेयी

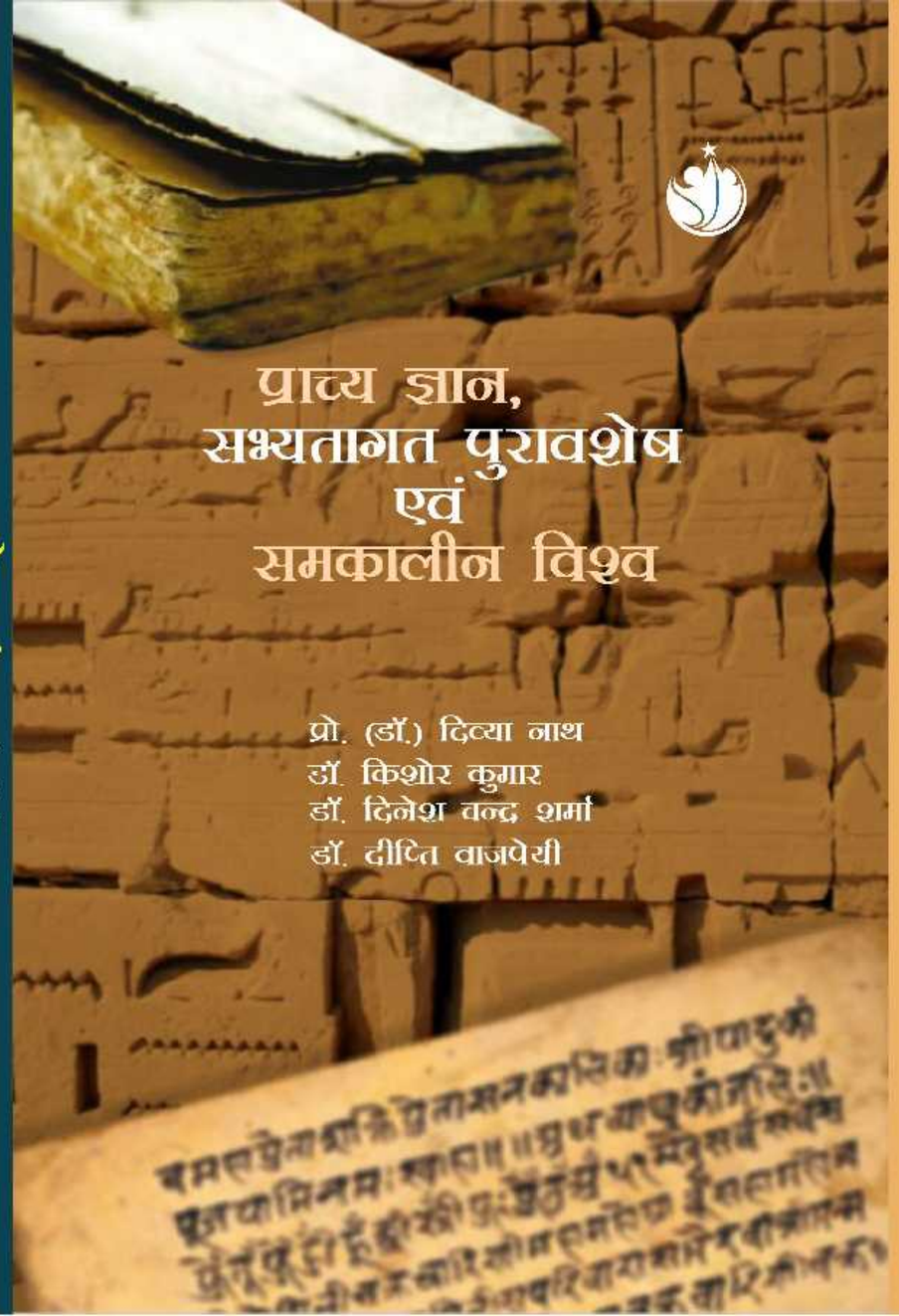

प्राच्य ज्ञान, सभ्यतागत पुरावशेष एवं समकालीन विश्व

प्रो. (डॉ.) दिव्या नाथ
डॉ. किशोर कुमार
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा
डॉ. दीप्ति वाजपेयी

भारत में संवाद का एक वृहद इतिहास प्राप्त है। प्राप्त शब्द का अभिप्राय है कि उससे प्राचीन इतिहास भी भविष्य में मिल सकता है। अतीत सदैव पूरा होता है, इतिहास अतीत नहीं है, बस उसे प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है, सत्य है कि इतिहास अतीत और वर्तमान के मध्य एक अंतहीन संवाद है। संवाद का महत्व भारतीयों के लिए कितना महत्व रखता है, यह हम भारतीय प्राप्त ग्रंथों में प्राचीन ऋग्वेद से समझ सकते हैं, जो कहता है 'आ नो भद्रा कृतवो यन्तु विश्वतः' अर्थात् हमें आदर्श विचारों को सागरत दिशाओं से अपनी तरफ आने देना चाहिए। सम्पादित पुस्तक 'प्राच्य ज्ञान, सभ्यतागत पुरावशेष एवं समकालीन विश्व' के प्रकाशन का उद्देश्य है कि पूरे विश्व में विशेषकर भारत में ऐसे क्या प्राचीन ज्ञान और सांस्कृतिक दस्तावेज हैं, जिसके सही स्वरूप और प्रासंगिकता को समझकर समसामयिक विश्व की चुनौतियों का समाधान निकाला जा सके।

प्राच्य ज्ञान, सभ्यतागत पुरावशेष
एवं
समकालीन विश्व

नालंदा प्रकाशन
दिल्ली

प्राच्य ज्ञान, सभ्यतागत पुरावशेष एवं समकालीन विश्व

प्रबंध सम्पादक

प्रो.(डॉ.) दिव्या नाथ

मुख्य सम्पादक

डॉ. किशोर कुमार

सम्पादक

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

डॉ. दीप्ति वाजपेयी

नालंदा प्रकाशन

दिल्ली

प्रत्येक आलेख में लेखक के अपने विचार है। जिसके लिए सम्पादक, प्रकाशक या अन्य कोई उत्तरदायी नहीं हैं।

ISBN : 978-81-945976-4-3

E- ISBN : 978-81-945976-5-0

© सम्पादक गण

प्रकाशक

नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

✆ : +9315194807

✉: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2021

अक्षर संयोजक

दीपिका शर्मा दिल्ली-94

मुद्रक

ट्राईडेंट इंटरप्राइजेज दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। सम्पादक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में उद्धरित विचार लेखक के अपने है।

प्राच्य ज्ञान, सभ्यतागत पुरावशेष एवं समकालीन विश्व

डॉ. विनय सहस्रबुद्धे
Dr. Vinay Sahasrabuddhe

सांसद
राज्य सभा
Member of Parliament
Rajya Sabha

अध्यक्ष
भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद्
President
INDIAN COUNCIL FOR
CULTURE RELATIONS (ICCR)

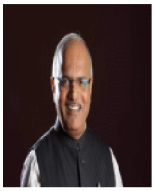

July 8, 2021

प्राक्कथन

विश्व की समस्त संस्कृतियों की शिरोमणि, समन्वयवादी एवं सर्वांगीण समुन्नत भारतीय संस्कृति व सभ्यता मूल स्वरूप में विश्व की प्राचीनतम एवं पूर्ण संस्कृति है। इसमें आध्यात्मिक एवं लौकिक दोनो पक्षों का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। आध्यात्मिक संस्कृति होने पर भी इसमें भौतिक या व्यवहारिक जीवन को उपेक्षित नहीं किया गया है।

विश्व की अनेक संस्कृतियाँ और सभ्यताएं अस्तित्व में आकर इतिहास के पन्नों पर धूमिल हो गई, किंतु अपने सुरम्य सौरभ से समस्त संसृति को सदा ही सुरभित करने वाली भारतीय संस्कृति व सभ्यता अपनी सुदृढता, विलक्षण समाहार शक्ति एवं सार्वभौमिक सार्वकालिक चिंतन के कारण आज भी प्रासंगिक है।

प्राच्यज्ञान, सभ्यतागत पुरावशेष एवं समकालीन विश्व विषयक यह पुस्तक प्राचीन विचारों के नवोन्मेष एवं प्राच्य मेधा के उन विविध रंगों से चित्रित है, जिन्हे भारत ही नही वरन् संपूर्ण विश्व में सम्मान प्रदान किया जाता रहा है।

मै प्राच्य ज्ञान के जिज्ञासु पाठकों एवं शोधार्थियों को इस संकलन के अवलोकन, चिंतन तथा मनन की संस्तुति करते हुए संपादक मंडल को इसके प्रकाशन की बधाई देता हूँ एवं प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूँ।

(विनय सहस्रबुद्धे)

आजाद भवन इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली - 110002 / Azad Bhawan, Indraprastha Estate, New Delhi - 110002
टेली / Tel.: 23378616, 23370698, फैक्स / Fax 23370702, ई-मेल / E-mail: president.iccr@nic.in
वेबसाइट / Web.: www.iccr.gov.in, www.vinaysahasrabudde.in

सम्पादकीय

भारत में संवाद का एक वृहद इतिहास प्राप्त है। प्राप्त शब्द से अभिप्राय है कि उससे प्राचीन इतिहास भी भविष्य में मिल सकता है। अतीत सदैव पूरा होता है, इतिहास अतीत नहीं है, बस उसे प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है, इसलिए ई. एच. कार ने कहा है कि इतिहास अतीत और वर्तमान के मध्य एक अंतहीन संवाद है। संवाद का महत्व भारतीयों के लिए कितना महत्व रखता है, यह हम भारतीय प्राप्त ग्रंथो में प्राचीन ऋग्वेद से समझ सकते है, जो कहता है 'आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः' अर्थात् हमें आदर्श विचारों को समस्त दिशाओं से अपनी तरफ आने देना चाहिए। सम्पादित पुस्तक 'प्राच्य ज्ञान, सभ्यतागत पुरावशेष एवं समकालीन विश्व' के प्रकाशन का उद्देश्य है कि पूरे विश्व में, विशेषकर भारत में ऐसे क्या प्राचीन ज्ञान और सांस्कृतिक दस्तावेज हैं, जिसके सही स्वरुप और प्रासंगिकता को समझकर समसामयिक विश्व की चुनौतियों का समाधान निकाला जा सके। जहाँ तक भारतीय प्राच्य ज्ञान का प्रश्न है, इसका केंद्र आध्यात्मिकता है, परन्तु इसका दायरा खगोल विज्ञान, गणित, राजनीति विज्ञान, राज्य संचालन, योग, चिकित्सा विज्ञान विशेषकर आयुर्वेद, दर्शन और संस्कृति जैसे विषयो से भी आगे है। हमारा भूगोल, जलवायु, पर्यावरण, मौसम और संस्कृति की विविधता हमें एक विशिष्ट देश बनाती है। सम्पूर्ण विश्व हमें एक सभ्यतागत राष्ट्र और सनातन हिन्दू धर्म को प्राचीनतम धर्म के रूप में स्वीकार करता है। भारत के पास एक सांस्कृतिक विविधता है, यहाँ विविधता का अर्थ विभाजन नहीं है और एकता का मतलब एकरूपता नहीं है। हमारी चेतना, हमारे सांस्कृतिक तत्व हमें जोड़ते है और हम पूरे विश्व को अपना परिवार मानने का भाव रखते है। हम बहुलतावाद पर या सहिष्णुता पर विश्वास ही नहीं करते बल्कि सच्चे अर्थो में उसे लागू भी करते हैं।

भारतीय दर्शन सदैव से समग्र है, यह जीवन के सभी आयामों और मृत्यु के पश्चात जीवन अथवा मोक्ष आदि सभी आयामों (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) को अपने अंदर समाहित किये हुए है। यह बड़े व्यापक परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और समस्त ब्रह्मांड की मंगलकामना के साथ सामूहिकता को प्राथमिकता देते हुए वसुधैव कुटुम्बकम की बात करता है। ऋग्वेद में कहा

गया है। 'एकम् सद विप्रा बहुधा वदन्ति' अर्थात् एक ही सत्य को विद्वान् अलग-अलग तरीके से देखते है अतः हम सत्य के बहुआयामी होने की बात युगों से स्वीकार करते है। महावीर इस सापेक्षिक सत्य के सिद्धांत को और संगठित स्वरुप देते हुए स्यादवाद का दर्शन प्रतिपादित करते है, जो एकांतिक सत्य, सापेक्षिक सत्य तथा पूर्ण सत्य को उल्लिखित करते हैं और उनके अनुसार व्यापक परिप्रेक्ष्य में ज्ञान प्राप्ति ही कैवल्य का मार्ग प्रशस्त करता है। यदि इस विश्व में व्यक्ति, संप्रदाय, समाज, राष्ट्र और संस्कृतियाँ अपने सापेक्षिक सत्यों को पूर्ण सत्य मानना छोड़ दे तो काफी समस्याओं का समाधान सहजता से हो सकता है। बौद्ध धर्म, भारतीय प्रज्ञा की विश्व के लिए एक बड़ी देन है और बौद्ध धर्म का सबसे व्यावहारिक सिद्धांत है- मध्यम मार्ग। यदि इस सिद्धांत को कोई व्यक्ति आत्मसात कर ले, तो चाहे वह किसी धर्म का अनुयायी हो, उसके जीवन में एक समन्वय अवश्य आ जायेगा। बौद्ध धर्म अपने अष्टांगिक मार्ग द्वारा हमें अपनी तृष्णाओं से मुक्त कर निर्वाण का मार्ग प्रशस्त करता है। हम मानते है कि परमात्मा और प्रकृति ने दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति को, प्रत्येक स्थान को, प्रत्येक क्षेत्र को कुछ न कुछ विशेष अवश्य दिया है। तभी तो वेदांत दर्शन कहता है कि प्रत्येक जीव और अजीव जो कुछ भी सृष्टि में है, वह ईश्वर का प्रकटीकरण ही है। जब हम इस सम्यक भाव से दुनिया की विभिन्न संस्कृतियों को देखते है तो यह अहसास होता है कि हर संस्कृति कुछ विशेष तत्वों के साथ विशिष्ट है। हमारे देश में हमारी सामूहिक चेतना के साथ, युगों से एक राष्ट्र के भाव के साथ, विभिन्न संस्कृति एक साथ पुष्पित पल्लवित होती रही। जब बीसवी शताब्दी में उत्तर आधुनिकतावादियों द्वारा सातवें दशक में महान वृतांतों को नकारते हुए सत्य के समन्वित/ एकीकृत स्वरुप की बात की और कहा कि विभिन्न संस्कृतियाँ एक साथ समृद्ध हो सकती हैं, तो भारत को यह बोध हुआ कि इस संकल्पना के सैद्धांतिक स्वरुप को समझे बिना अनजाने में ही भारत तो युगों से इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। अतीत में लोकतान्त्रिक मूल्यों के साथ-साथ समसामयिक भारत में राजनीतिक लोकतंत्र निरंतर अपने बेहतर स्वरुप को प्राप्त कर रहा है और दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र होने के नाते हम पूरी दुनिया के लिए एक उदाहरण हैं। परन्तु भारत केवल राजनैतिक क्षेत्र में ही नहीं अपितु धार्मिक लोकतंत्र (विभिन्न धर्मो के अनुयायी सहिष्णुता से युगों से साथ रहते है) और आध्यात्मिक लोकतंत्र (एक ही धर्म में उपासना और मोक्ष प्राप्ति के विभिन्न मार्गो का अनुसरण) के लिए भी एक मिसाल है।

प्रस्तुत पुस्तक में प्राचीन ज्ञान, सभ्यतागत पुरावशेष एवं समकालीन विश्व से संबंधित विभिन्न बिंदुओं को समाहित करने का प्रयास किया गया है, इस दृष्टि से पुस्तक को पांच मुख्य संवर्गों के अंतर्गत बांटा गया है।

प्रथम संवर्ग, भारतीय संस्कृति, धर्म एवं अध्यात्म से संबंधित है। जिसमें भारतीय धर्म, दर्शन व अध्यात्म के मूल तत्व, धर्म एवं विज्ञान का अंतः संबंध, प्राच्य मेधा के अनुरूप कर्म सिद्धांत, सृष्टि की अवधारणा तथा सृष्टि उत्पत्ति विषयक सिद्धांतों को समाहित किया गया है।

द्वितीय संवर्ग में, भारतीय प्राचीन ज्ञान के विविध आयाम यथा भारतीय ज्ञान प्रवाह में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना, आयुर्चिकित्सा की संकल्पना एवं महत्व, भारतीय परंपरा में संगीत का उद्गम, विकास एवं महत्व के साथ-साथ प्राचीन भारतीय मेधा में शिक्षा की अवधारणा, व्यवस्था एवं जीवन तथा मूल्यों के साथ शिक्षा के सहसंबंध आदि पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

तृतीय संवर्ग में, प्राचीन भारतीय परिदृश्य में समाज और राजनीति की संकल्पना एवं वस्तुस्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है, जिसके अंतर्गत मुख्यतः दंडनीति, राजनीतिक अनुशासन, लोकतांत्रिक व्यवस्था, जाति एवं वर्ण व्यवस्था एवं महिलाओं की स्थिति इत्यादि को सम्मिलित किया गया है।

चतुर्थ संवर्ग में, भारतीय प्राचीन मेधा से निःसृत मध्यम विचारधारा- बौद्ध एवं जैन धर्म के सिद्धांतों एवं विशेषताओं को उल्लिखित किया गया है जिसके अंतर्गत साधना पद्धति, चिकित्सीय ज्ञान स्रोत, नैतिकता एवं मूलभूत अवधारणाओं का संकलन है।

पंचम संवर्ग, भारतीय परिप्रेक्ष्य में सभ्यतागत पुरावशेष की झलक के साथ प्रस्तुत है। जिसमें प्राचीन धरोहर के प्रतिमान खजुराहो, बुर्जहोम, अजंता इत्यादि पर शोध आलेखों का संचयन है।

अंतिम संवर्ग प्राचीन ज्ञान एवं समकालीन विश्व के समन्वय के रूप में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास, वर्तमान में प्रौद्योगिकी का महत्व एवं प्रासंगिकता की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

सम्पादक मंडल आशान्वित हैं कि इस पुस्तक के माध्यम से भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा का बहुआयामी प्रवाह पाठकों तक अवश्य पहुंचेगा। भविष्य में भी भारतीय ज्ञान परंपरा के अथाह सागर से कुछ नवीन मोती चुन उन्हें समकालीन प्रासंगिकता के साथ में प्रस्तुत करने का प्रयास रहेगा।

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः।
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।
मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

सम्पादक मण्डल

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

सम्पादकीय

खण्ड – (क)

भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन एवं अध्यात्म

1. **भारतीय प्राच्य ज्ञानः धर्म, दर्शन और विज्ञान** 1
   डॉ. किशोर कुमार
2. **भारतीय प्राच्य ज्ञान और कर्म सिद्धान्त** 7
   डॉ. अंजना शर्मा
3. **प्राचीन भारतीय बौद्धिकता : वैश्विक विरासत के संदर्भ में** 15
   डॉ. आभा सिंह
4. **वेदों में अध्यात्म** 20
   डॉ. दीपशिखा
5. **संस्कृत वाङ्मय में भारतीय सांस्कृतिक साधना** 32
   डॉ. नीलम शर्मा
6. **धर्मदर्शन में ईश्वर की अवधारणा** 41
   डॉ. कनक लता
7. **हिरण्मय त्रिवृत : सृष्टि सृजन की वैदिक अवधारणा** 52
   चन्द्रमणि सिंह
8. **ईशावास्योपनिषद् में ''कर्मयोग''** 59
   गुंजन

खण्ड – (ख)
भारतीय प्राच्य ज्ञान के विविध आयाम

9. **भारतीय प्राच्य ज्ञान एवं पर्यावरण संरक्षण** 67
डॉ. दीप्ति वाजपेयी

10. **संगीतः आदि से वर्तमान तक** 76
डॉ. बबली अरूण

11. **भारतीय प्राच्य ज्ञान में आयुर्चिकित्सा** 82
संजू नागर

12. **गुरूकुल : एक अद्वितीय विद्यालयी प्रणाली** 87
धर्मेन्द्र कुमार

13. **मूल्य, परिवार और नैतिक शिक्षा की भारतीय संकल्पना** 94
डॉ. निधि रायज़ादा
अमित कुमार

14. **प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली** 99
डॉ. नीलम सोनी

15. **वैदिक काल में शिक्षा व्यवस्था** 105
डॉ. रतन सिंह

खण्ड – (ग)
भारतीय प्राच्य ज्ञान का सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन

16. **प्राचीन भारत में दण्डनीति** 109
डॉ. राजेश कुमार पाण्डेय
मीनाक्षी सिंह

17. **आर्ष साहित्य में राजनैतिक अनुशासन** 117
सुमित कुमार

18. **आधुनिक भारत में लोकतंत्र की स्थिति** 121
डॉ. महेश मेवा फरोश
प्रतिमा

19. **प्राचीन भारत मे द्वितीय नगरीय क्रान्ति** 128
निशा बलियान

20. **ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में जातिव्यवस्था** 133
डॉ. अमिता त्रिपाठी
21. **ऋग्वैदिक काल एवं महिला सशक्तिकरण** 143
रजनीता कुमारी

खण्ड – (घ)
जैन एवं बौद्ध दर्शन

22. **आधुनिक बौद्ध युग में ध्यान-साधना** 149
अमला शील
23. **बौद्ध धर्म का सदाचार एवं मानवता पर प्रभाव** 157
डॉ. किशोर कुमार
रीना सिंह
24. **बुद्ध के उपदेशो में सामाजिक जीवन का महत्व** 169
रचना
25. **प्राचीन भारत में चिकित्सा पद्धति** 176
अन्जू लता श्रीवास्तव
26. **प्रतीत्यसमुत्पाद एक विमर्श : वैभाषिक एवं माध्यमिक दर्शनों के आलोक में** 186
बिन्द कुमार
27. **जैन धर्म में सल्लेखना – एक विश्लेषण** 192
डॉ. रंजना जैन

खण्ड – (ङ)
भारतीय सभ्यतागत पुरावशेष

28. **प्राचीन भारतीय धरोहरः खजुराहो मंदिर** 199
पंकज कुमार
29. **बुर्जहोम : सभ्यातागत पुरावशेष का प्रामाणिक प्रतिरूप** 210
डॉ. निधि रायज़ादा
सुषमा रानी
30. **अजंता की गुफाएँ और बौद्ध धर्म** 215
प्रीति

खण्ड – (च)

भारतीय प्राच्य ज्ञान एवं समकालीन विश्व

31. **भारतीय प्राच्य ज्ञान से आधुनिक समस्याओं का समाधान** 225

डॉ. मनोरमा सिंह

32. **भारत मे विज्ञान प्रौद्योगिकी शिक्षा** 234

डॉ. आशारानी

शशी

33. **शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की प्रासंगिकता** 247

नीरज कुमार

जितेन्द्र कुमार

34. **भारतीय प्राच्य ज्ञान में विज्ञान और तकनीक** 257

डॉ. रिंकू शर्मा

खण्ड – (क)

भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन एवं अध्यात्म

1.

भारतीय प्राच्य ज्ञानः धर्म, दर्शन और विज्ञान

डॉ. किशोर कुमार*

प्राचीन भारतीय मेधा धर्म-दर्शन और विज्ञान के अन्योन्याश्रित संबंध का समर्थन करती है। धर्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक है। दोनों का ही प्रारंभ जिज्ञासा से होता है। सत्य की खोज में यह दोनों सहगामी मार्ग के समान है। सामान्यतः माना जाता है कि विज्ञान तथ्यों और प्रयोगों पर आधारित है, जबकि धर्म आस्था और विश्वास पर। दोनों ही अपार शक्ति का स्रोत है। दर्शन धर्म का पथ प्रदर्शक है, जबकि विज्ञान धर्म का ही दूसरा रूप है। विज्ञान व धर्म के परस्पर समान गुणों के कारण ही दोनों को एक दूसरे का पूरक कहा गया है। अल्बर्ट आइंस्टीन के अनुसार- "धर्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक है। धर्म के बिना विज्ञान लगड़ा है व विज्ञान के बिना धर्म अंधा।" एक महान वैज्ञानिक होने के बावजूद भी उनका विश्वास था कि सृष्टि की रचना इत्तेफाक की बेतरतीब ईटों से नहीं बल्कि पूर्व निर्धारित व्यवस्था के आधार पर हुई है। सृष्टि की रचना के पीछे जो महाशक्ति कार्य कर रही है, वही ब्रह्म या ईश्वर है।

विज्ञान सृष्टि के संचालन को ऊर्जा के संरक्षण का सिद्धांत मानता है, जिसे "लाँ ऑफ कंजर्वेशन ऑफ एनर्जी" कहा जाता है। इसके अनुसार ऊर्जा को ना तो उत्पन्न किया जा सकता है और ना ही नष्ट किया जा सकता है। इसका रूपांतरण मात्र ही संभव है। यही हमारी प्राचीन

***एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, निदेशक स्वामी विवेकानंद अध्ययन केंद्र कु. मा. राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर।**

प्रज्ञा भी स्वीकार करती है, जिसके अनुसार ईश्वर ही संसार को संचालित करने वाली ऊर्जा है, शक्ति है, नियामक तत्व है, वह स्वयंभू है, सनातन है और विभिन्न रूपों में प्रकट है, अर्थात यह सृष्टि ब्रह्म रूपी ऊर्जा का रूपांतरण मात्र है। विज्ञान मानता है कि संसार में ऊर्जा का संचरण ऊर्जा स्रोत में होता है, जो स्रोत कभी समाप्त नहीं होता। यह सृष्टि ऊर्जा का ही परिवर्तित रूप है। धर्म ग्रंथों में भी ईश्वर को इसी रूप में परिभाषित किया गया है-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

अर्थात् वह परमात्मा पूर्ण है, यह जगत भी पूर्ण है क्योंकि यह उस पूर्ण परमात्मा की ही अभिव्यक्ति है। उस पूर्ण ब्रह्म से इस पूर्ण जगत को निकाल लेने पर भी पूर्ण ब्रह्म ही शेष रहता है क्योंकि यह जड़ चेतन समस्त जगत उसी ब्रह्म का रूपांतरण मात्र है। वह परम ऊर्जा विभिन्न रूपों में इधर उधर बिखरी हुई है। ब्रह्म रूप परम शक्ति ही ऊर्जा का स्रोत है जो अनेक रूपों में इस सृष्टि में विद्यमान है और वह स्रोत कभी समाप्त नहीं होता। तदनुरूप विज्ञान भी मानता है कि जब ऊर्जा का रूपांतरण होता है तो ऊर्जा की कुल राशि स्थिर रहती है, साथ ही ऊर्जा को ना तो बनाया जा सकता है और ना ही नष्ट किया जा सकता है। केवल इसके रूप बदले जा सकते हैं। विभिन्न रूपों में हम ऊर्जा को उष्मा, ध्वनि, यांत्रिक क्रियाविधियों के रूप में देखते हैं अर्थात यह ऊर्जा के परिवर्तनशील रूप है। श्रीमदभगवतगीता के अनुसार भी आत्मा नामक ऊर्जा को कभी नष्ट ना होने वाला माना गया है-

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

अर्थात् आत्मा अजन्मी, नित्य, शाश्वत और पुरातन है। शरीर के नष्ट होने पर भी यह नष्ट नहीं होती। यह पुराने शरीर को त्याग कर नवीन शरीर धारण करती है।

इस प्रकार धर्म और विज्ञान दोनों ही ऊर्जा को अनंत और परिवर्तनशील मानते हैं। सूर्य विज्ञान के लिए उपयोगी है, तो धर्म के लिए भी आराधना की विषय वस्तु है। सूर्य हमें एक साथ दो ऊर्जा (प्रकाश और उष्मा) प्रदान करता है इसलिए सूर्य को पूजनीय मानकर विभिन्न धर्म ग्रंथों में इसकी स्तुति की गई है तथा इसकी महिमा का वर्णन किया गया है। इस संदर्भ में विज्ञान भी सूर्य को प्रबल ऊर्जा का स्रोत मानता है। खगोल एवं ज्योतिष विज्ञान सूर्य पर आधारित है। दिन रात का चक्र और प्रकाश संश्लेषण की क्रिया भी सूर्य पर ही आधारित है।

इस प्रकार भारतीय मेधा के अनुसार धर्म और विज्ञान एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक अदृश्य की व्याख्या करता है, तो दूसरा दृश्य की। भारतीय प्राचीन ज्ञान में विज्ञान को धर्म के साथ जोड़कर मानव कल्याण के रूप में प्रयुक्त किया गया है। यही बात पर्यावरण संरक्षण के बिंदु पर भी देखी जा सकती है। हमारी संस्कृति के धार्मिक ग्रंथों में प्रकृति को पूजनीय मानकर उसे संरक्षित करने का श्लाघनीय संदेश निहित है। बरगद, नीम, तुलसी, पीपल इत्यादि जीवन वृक्षों की पूजा, गंगा आदि पवित्र नदियों के जल के प्रति आस्था भावना, "*माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः*"

कहकर पृथ्वी को मातृवत मानकर उनके प्रति कृतज्ञता का भाव रखना, यह सभी विज्ञान की भांति पारिस्थितिकी संतुलन विनिर्मित करने का एक सफल प्रयास था, जिसका संरक्षण आज सृष्टि को विनाश के कगार पर ले जाने से रोकने के लिए वैज्ञानिकों द्वारा अपरिहार्य माना जा रहा है।

इस प्रकार धर्म और विज्ञान वस्तुतः समान तथ्य की पुष्टि करते हैं। अंतर मात्र कहने के तरीके में है। धर्म आस्था और विश्वास के माध्यम से उन्हीं तथ्यों की पुष्टि करता है, जिन्हें विज्ञान तर्क और प्रयोगों के माध्यम से सिद्ध करता है। धर्म और विज्ञान के संबंध को समझने के साथ-साथ धर्म और दर्शन के संबंध को जानना भी आवश्यक है। भारतीय प्राचीन मेधा के अनुसार दर्शन उस विद्या को कहा जाता है जिसके द्वारा तत्व का ज्ञान हो सके। जिसके द्वारा देखा जाए वह दर्शन है। पाणिनीय व्याकरण के अनुसार दर्शन शब्द "द्रशिर प्रेक्षणे" धातु से ल्युट् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। यहां दर्शन का तात्पर्य सामान्य देखना नहीं है। यह प्रेक्षणे शब्द का प्रयोग "प्रकृष्ट ईक्षण" अर्थात अंतः नेत्रों के द्वारा देखना या मनन करके निष्कर्ष निकालना ही दर्शन का अभिधेय है। भारतीय दार्शनिक चिंतन मूलतः आस्तिकवादी है। इस चिंतन के आधार स्तंभ षड्दर्शन माने गए हैं -

सांख्य दर्शन

कपिल मुनि द्वारा प्रतिपादित सांख्य दर्शन द्वैतवादी अर्थात् दो मूल स्वतन्त्र सत्ताओं को मानने वाला दर्शन है। सांख्य दर्शन का मूल ग्रन्थ सांख्य सूत्र है। इस दर्शन के अनुसार चेतन पुरुष व जड़ प्रकृति दो तत्वों की सत्ता है। इन्हीं के संयोग वियोग से सारे विश्व की सृष्टि और विलय होता है समस्त भौतिक वस्तुएं त्रिगुणात्मक प्रकृति से निष्पन्न होने के कारण त्रिगुणात्मक (सत-रज-तम) हैं। जब पुरुष अपने मूलरूप को जानकर प्रकृति से अपनी भिन्नता का अनुभव करता है, तब वह प्रकृति के बन्धन से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

योग दर्शन

योग दर्शन के प्रवर्त्तक महर्षि पातंजलि माने जाते हैं। इस दर्शन का प्रामाणिक, प्राचीनतम ग्रन्थ पातंजलि का योग-सूत्र है। योग साधना में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा व समाधि का प्रमुख स्थान है। योग दर्शन को सांख्य का पूरक दर्शन माना जाता है। सांख्योक्त 25 तत्त्वों के अतिरिक्त इसमें ईश्वर को भी स्वीकार किया गया है।

योग का अर्थ "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" अर्थात् चित्त वृत्तियों का निरोध ही योग है। यमादि अष्टांग योग के द्वारा चित्त वृत्तियों को रोककर मानव कैवल्य की प्राप्ति कर सकता है।

न्याय दर्शन

इस दर्शन के प्रवर्त्तक महर्षि गौतम हैं। न्याय दर्शन तर्क प्रधान दर्शन है। इसके अनुसार पदार्थो के यथार्थ ज्ञान के लिये चार प्रकार के प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान व शब्द) अपेक्षित हैं। इस दर्शन का प्रमुख ग्रन्थ गौतम का न्याय-सूत्र है। न्याय दर्शन का उद्देश्य आत्मा व ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध कर आत्मा को सांसारिक बन्धनों से मुक्त कर मोक्ष पद का मार्ग प्रदर्शित करना है। मोक्ष की अनुभूति तत्व ज्ञान से हो सकती है। इस हेतु न्याय दर्शन में सोलह पदार्थो

की व्याख्या की गयी है। जो इस प्रकार हैं- प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा हेत्वामास, छल, जाति व निग्रह स्थान।

वैशेषिक दर्शन

वैशेषिक दर्शन को परमाणुवाद भी कहा जाता है। इस दर्शन का प्रतिपादन महर्षि कणाद ने कणाद-सूत्र में किया है। वैशेषिक-दर्शन प्रत्यक्ष व अनुमान दो प्रमाणों को स्वीकार करता है। इसके अनुसार सृष्टि की सभी वस्तुएं सात मूल पदार्थ- द्रव, गुण, कर्म, सामान्य विशेष, समवाय, अभाव द्वारा निर्मित हैं। न्याय दर्शन के समान ही वैशेषिक-दर्शन का उद्देश्य भी मिथ्या ज्ञान से निवृत्ति व तत्व ज्ञान में प्रवृत्ति दिलाकर मोक्ष की प्राप्ति कराना है।

मीमांसा दर्शन

मीमांसा-दर्शन के प्रणेता आचार्य जैमिनी हैं। वेदों के पूर्व पक्ष कर्म-काण्ड की मीमांसा करने वाले दर्शन को मीमांसा दर्शन कहा जाता है। मीमांसा दर्शन का विषय धर्म की व्याख्या करना है। इसमें वेदविहित इष्ट साधन धर्म का लक्षण बतलाया गया है। मीमांसा-दर्शन छः प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द अर्थापत्ति तथा अभाव) स्वीकार करता है तथा ज्ञान प्राप्ति के लिए ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान व ज्ञातता को मानता है।

वेदान्त दर्शन

भारतीय दर्शन का चरमोत्कर्ष वेदान्त में मिलता है। वेदान्त सूत्र की अनेक आचार्यो ने व्याख्याएं की हैं किन्तु इनमें शंकराचार्य व रामानुजाचार्य विशिष्ट हैं। *"ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या"* कहकर शंकराचार्य ने अद्वैत वेदान्त को स्वीकार किया है। इनके अनुसार निर्गुण ब्रह्म अखण्ड, सर्वश्रेष्ठ, सर्वव्यापी व सच्चिदानन्द है। शंकर के अनुसार ज्ञान ही मुक्ति का द्वार है। अद्वैत वेदान्त की कल्पना भारतीय दर्शन का पर्यावसान है। समस्त दर्शनों से सूक्ष्म व चरम कल्पना वेदान्त दर्शन की स्वीकार की गयी है।

उपर्युक्त षड्दर्शन पर ही धर्म की नींव आधारित है। विभिन्न दर्शनों के आधार पर क्रमशः आगे बढ़ते हुए भारतीय मेधा अंततः अद्वैतवाद अर्थात अनंत ऊर्जा के निष्कर्ष पर पहुंची और यही विज्ञान का भी तर्क और प्रयोग आधारित निष्कर्ष है।

नव्य वेदान्तानुसार मानव सतत् विकास की प्रक्रिया है, जो प्रतिपल विकास की ओर अग्रसर होता रहता है। विकास की यह प्रक्रिया जड़त्व से प्राणतत्व, मन, मानव और अतिमानस स्तर से होती हुई निरपेक्ष सत की चेतना तक गतिशील रहती है। अतः व्यावहारिक अर्थ में विकास ब्रह्म का है, ब्रह्म के द्वारा है, ब्रह्म के लिये है। विकास की तीन अवस्थायें हैं। चित् शक्ति का उर्ध्वगमन की ओर अग्रसर होना, विकास की प्रथम अवस्था है जैसे-भौतिक वस्तु से जीवन तत्व, जीवन तत्व से मानस व मानस से अतिमानस का विकास उर्ध्वगमन है। वस्तु का विस्तार या व्यापकता विकास की द्वितीय अवस्था हैं इसमें निम्न स्तर की वस्तु का विस्तारण व विभेद बढ़ता है तथा उच्च स्तर की वस्तु का स्वरुप धारण करता है। उच्चस्तर की वस्तु निम्न स्तर की वस्तु में सामन्जस्य विकास की तृतीय अवस्था है। इसमें उच्च स्तर तत्व की उद्भावना तथा उच्च स्तर

में निम्न स्तर का संश्लेषण व परिवर्तन होता है अर्थात् तृतीय अवस्था में उच्च स्तर तत्व का अवतरण और निम्न स्तर का उर्ध्वगमन दोनों का समन्वय होता है। विकास समष्टि व व्यष्टि दोनों का होता है। जैसे व्यक्ति का विकास पुनर्जन्म के द्वारा भी होता है, तथा योग व प्रयत्न के द्वारा भी। विकास सतत् व शाश्वत है। उसके लिये कोई सीमा या समय निर्धारित नहीं है। यह भूत, भविष्य तथा वर्तमान से युक्त रहता है। विकास तब तक होता रहता है जब तक कि आत्मा की अभिव्यक्ति नहीं हो जाती। विकास दोनों तरह का होता है, निम्नस्तर की वस्तुओं का उत्थान (उर्ध्वगमन) और उच्चस्तर की वस्तुओं का अवरोहण। विकास अचेतन जगत् तक सीमित नहीं हैं वरन् उससे परे मानस अतिमानस तक होता है। ब्रह्म आत्माभिव्यक्ति का आनन्द लेने के लिये जगत के रूप में अभिव्यक्त होता है या अवतार लेता है, वह ब्रह्म का विकास है। मानव को निम्न स्तर से उठकर महापुरुष व उससे ऊपर दैवत्व शक्ति के रूप में उत्तरण मानवीय विकास है। विकास प्रक्रिया अब तक जड़त्व, प्राणत्व मन से होती हुई मानस स्तर तक पहुँचने में सक्षम हैं। प्राण तत्व जड़त्व में विकसित होता है अतः जड़ से टूटा हुआ नहीं है। मानस अपने पहले के तीनों स्तरों को समेटे है क्योंकि वह उन्हीं में विकसित हुआ है। अब मानस के स्तर को प्रतीक्षा है और उच्चस्तर रूपों में अतिमानस स्तर में उठने की। यह विकास प्रक्रिया का अन्तिम पग हैं क्योंकि अतिमानस स्तर पर पहुँचते ही निरपेक्ष सत् की चेतना स्पष्ट हो जायेगी।

वस्तुतः नव्य वेदांत के सतत विकास का सिद्धांत आधुनिक विज्ञान के विकासवाद पर आधारित है। किंतु धर्म आध्यात्मिक विकास का पक्षधर है और विज्ञान भौतिक विकास का। भारतीय प्राचीन मेधा हर पक्ष पर समन्वय और संतुलन पर बल देती है। अतः अंत में यह कहना अभीष्ट है कि धर्म-दर्शन और विज्ञान का संतुलन है सृष्टि को सत्यम् शिवम् सुंदरम् की अनुभूति करा सकता है।

संदर्भ

1 आधुनिक चिंतन में वेदांत : डॉ. महेन्द्र शेखावत, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

2 गीता प्रबन्ध : श्री अरविन्द, अरविन्द आश्रम, पाण्डुचेरी।

3 प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता : डॉ. सत्यप्रकाश शर्मा, साहित्य प्रकाशन, मेरठ।

4 प्राचीन भारतीय संस्कृति के मूल तत्व : डॉ. आर.एस. वर्मा, संजय पुस्तक मन्दिर, आगरा।

5 भारतीय दर्शन (भाग 1/2) : डॉ. राधाकृष्णन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

6 भारतीय दर्शन : दत्त एवं चट्टोपाध्याय, कलकत्ता यूनीवसिटी प्रेस, कलकत्ता।

7 भारतीय दर्शन : बलदेव उपाध्याय, साहित्य प्रकाशन, मेरठ।

8 भारतीय संस्कृति का इतिहास : डॉ. रमेश चन्द्र वर्मा, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा।

9 भारतीय दर्शन की रूपरेखा : प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, माँगे लाल बनारसी दास बंगलो रोड, आगरा।

10 भारतीय संस्कृति के मूल तत्व : डॉ. सत्यनारायण पाण्डे, डॉ. आर. बी जोशी, सर्वोदय नगर, आगरा।

11 भारतीय संस्कृति : डॉ. राजकिशोर सिंह, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

12 शिक्षा एवं भारतीय समाज : डी.एल. शर्मा, इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाउस, मेरठ।

13 शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि : एल. के. ओड, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

14 ईशावास्योपनिषद् : गीता प्रेस, गोरखपुर।

15 ऋग्वेद : नाग प्रकाशक, जवाहर नगर, दिल्ली।

16 गीता (तत्व विवेचनी टीका) : जयदयाल गोयन्दका, गीताप्रेस, गोरखपुर।

17 छान्दग्योपनिषद् : गीता प्रेस, गोरखपुर।

18 भगवद् गीता भाष्य : रामानुजाचार्य, गीता प्रेस, गोरखपुर।

19 भगवद् गीता भाष्य : शंकराचार्य, गीता प्रेस, गोरखपुर।

20 मनुस्मृति : गीता प्रेस, गोरखपुर।

❒❒❒